

Bhic 132 भारत का इतिहास लगभग 300 सी ई से 1206 तक

All important questions for December 2024 exam

Final Revision class 1

In Hindi

आसान भाषा में समझे।

गुप्त शासकों के अधीन प्रशासन का वर्णन कीजिए।

गुप्त साम्राज्य भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण और स्वर्णिम काल था, जो लगभग 320 ई. से 550 ई. तक फैला हुआ था। गुप्त शासकों के अधीन प्रशासन ने भारत के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया। इस समय प्रशासनिक प्रणाली सुव्यवस्थित और कुशल थी। गुप्त शासकों के प्रशासन के प्रमुख पहलुओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है:

1. केन्द्रीय शासन (Central Administration):

गुप्त काल में केन्द्रीय शासन बहुत मजबूत और केंद्रीकृत था। गुप्त सम्राट स्वयं सर्वोच्च शासक होते थे और उनके पास अत्यधिक शक्ति होती थी। सम्राट के द्वारा नियुक्त किये गए मंत्रियों और अधिकारियों द्वारा प्रशासन चलाया जाता था।

- **सम्राट (Emperor):** सम्राट को "राजाधिराज" (राजों का राजा) कहा जाता था और उसे राज्य के समग्र शासन का प्रभारी माना जाता था।
- **मंत्री (Ministers):** सम्राट के सलाहकार और मंत्री शासन के विभिन्न मामलों में सहयोग करते थे। गुप्त सम्राटों के दरबार में उच्च श्रेणी के मंत्रियों का स्थान था।
- **राजकुमार (Prince):** सम्राट के पुत्रों को राज्य के विभिन्न हिस्सों का शासक नियुक्त किया जाता था। वे उपराज्यपाल के रूप में कार्य करते थे।

2. स्थानीय प्रशासन (Local Administration):

गुप्त साम्राज्य में स्थानीय प्रशासन भी मजबूत था। गुप्त शासकों ने स्थानीय शासकों को स्वायत्तता दी थी, लेकिन वे राज्य के नियंत्रण में रहते थे। गुप्त प्रशासन में निम्नलिखित प्रमुख अधिकारी होते थे:

- **प्रमुख (Pradeshika):** यह अधिकारी राज्य के एक प्रांत (क्षेत्र) का प्रमुख होता था और सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था।

- **महासत्ता (Mahasatta):** यह अधिकारी एक गांव या नगर के प्रशासन का प्रभारी होता था और स्थानीय न्याय और कानून व्यवस्था बनाए रखने का कार्य करता था।
- **ग्राम प्रमुख (Village Head):** छोटे गाँवों के प्रशासन का काम ग्राम प्रमुख के पास था। वह गांव के सामाजिक और आर्थिक मामलों को नियंत्रित करता था।

3. न्याय व्यवस्था (Judicial Administration):

गुप्त काल में न्याय व्यवस्था का भी विशेष महत्व था। न्याय व्यवस्था को एक मजबूत और प्रभावी प्रणाली के रूप में स्थापित किया गया था। न्यायालयों में सम्राट के आदेशों का पालन होता था, और न्यायाधीश मामलों का निष्पक्ष निर्णय करते थे।

- **राज्य न्यायधीश (State Judge):** राज्य स्तर पर न्यायधीशों का कार्य महत्वपूर्ण था। वे गंभीर अपराधों पर फैसला लेते थे।
- **ग्राम न्यायधीश (Village Judge):** छोटे अपराधों और विवादों का निपटारा गांव के स्तर पर ग्राम न्यायधीश द्वारा किया जाता था।

4. आर्थिक प्रशासन (Economic Administration):

गुप्त साम्राज्य में अर्थव्यवस्था कृषि, व्यापार, और उद्योग पर आधारित थी। गुप्त शासन के दौरान भूमि कर (land tax) एक महत्वपूर्ण आर्थिक स्रोत था। शासन ने विभिन्न क्षेत्रों में कड़ी निगरानी रखी थी।

- **कर (Taxes):** किसानों से भूमि कर लिया जाता था, और व्यापारियों से व्यापार कर वसूला जाता था।
- **वाणिज्य और व्यापार (Commerce and Trade):** व्यापार और वाणिज्य के लिए गुप्त साम्राज्य ने महान व्यापारिक मार्गों का निर्माण किया और व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया।

5. सैन्य प्रशासन (Military Administration):

गुप्त साम्राज्य का सैन्य बहुत मजबूत था। गुप्त सम्राटों ने सैन्य में नये प्रकार के संगठनात्मक ढांचे और युद्धकला का विकास किया था।

- **सैन्य प्रमुख (Army Chief):** सेना का प्रमुख राज्य के सैन्य मामलों को नियंत्रित करता था।
- **विभिन्न सैन्य विभाग:** गुप्त शासकों के पास विभिन्न प्रकार की सेनाएँ थीं, जैसे पैदल सेना, घुड़सवार सेना, और हाथी सेना, जो विभिन्न युद्धों और आक्रमणों के लिए तैयार रहती थीं।

6. संस्कृति और शिक्षा का विकास:

गुप्त शासकों ने संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह काल भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम युग माना जाता है। साहित्य, कला, गणित, और विज्ञान के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य हुए।

- **कला और वास्तुकला:** गुप्त काल में कला और वास्तुकला का बहुत विकास हुआ। गुप्त शासकों के दरबार में कलाकारों और शिल्पकारों को प्रोत्साहन दिया गया। अलीराजपुर और कांची के प्रसिद्ध मंदिर इस काल की कला के उदाहरण हैं।

- **शिक्षा:** गुप्त काल में शिक्षा का विकास हुआ। प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र जैसे नालंदा विश्वविद्यालय इस समय अस्तित्व में आए। यहाँ पर शिक्षा और शोध का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता था।

निष्कर्ष:

गुप्त शासकों के अधीन प्रशासन बहुत ही सुव्यवस्थित और प्रभावी था। उनके शासन में सम्राटों की शक्ति के बावजूद स्थानीय प्रशासन और न्याय व्यवस्था को मजबूत किया गया था। इसके परिणामस्वरूप गुप्त साम्राज्य का समाज समृद्ध हुआ और यह भारतीय इतिहास के सबसे गौरवमयी युगों में से एक माना जाता है।

हर्ष के सैन्य अभियानों के आधार पर उसके साम्राज्य की सीमा और विस्तार क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।

हर्षवर्धन (हर्ष) एक प्रमुख गुप्त शासक था, जिसने 7वीं शताब्दी के मध्य में भारतीय उपमहाद्वीप में महत्वपूर्ण साम्राज्य स्थापित किया था। हर्षवर्धन का साम्राज्य उत्तरी भारत, मध्य भारत, और कुछ दक्षिणी क्षेत्रों तक फैला था। हर्ष के सैन्य अभियानों के आधार पर उसके साम्राज्य की सीमा और विस्तार क्षेत्र पर निम्नलिखित प्रकाश डाला जा सकता है:

1. हर्ष का साम्राज्य:

हर्षवर्धन का साम्राज्य लगभग 606 ई. से 647 ई. तक विस्तारित था, और उसने भारतीय उपमहाद्वीप के कई हिस्सों पर शासन किया। हर्ष ने अपने सैन्य अभियानों के माध्यम से भारत के एक बड़े भूभाग को नियंत्रित किया, और उसके साम्राज्य में निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों का समावेश था:

- **उत्तर भारत:** हर्षवर्धन का शासन मुख्य रूप से उत्तर भारत में था। उसका साम्राज्य पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और बिहार के क्षेत्रों में फैला हुआ था। उसका प्रशासन कन्नौज (जो उत्तर प्रदेश में स्थित है) से चलता था, जो साम्राज्य का केंद्रीय शहर था।
- **मध्य भारत:** हर्ष ने मध्य भारत के कुछ हिस्सों को भी अपने साम्राज्य में शामिल किया। मथुरा और मपलिपुर जैसे प्रमुख क्षेत्रों में उसकी पकड़ मजबूत थी।
- **वर्तमान पाकिस्तान और अफगानिस्तान का कुछ हिस्सा:** हर्ष ने अपने अभियानों के माध्यम से पश्चिमी भारत के पाकिस्तान और अफगानिस्तान क्षेत्रों पर भी विजय प्राप्त की थी, खासकर पश्चिमी पंजाब और सिंध क्षेत्र में। यह क्षेत्रों हर्ष के साम्राज्य के पश्चिमी सीमा के रूप में कार्य करते थे।

2. सैन्य अभियानों का विस्तार:

हर्ष के साम्राज्य के विस्तार में उसके सैन्य अभियानों का महत्वपूर्ण योगदान था। हर्ष ने कई युद्धों और अभियानों के माध्यम से अपनी सीमा को बढ़ाया। इन अभियानों में प्रमुख थे:

(i) बंगाल और बंगाल के आसपास के क्षेत्र में विजय:

हर्ष ने बंगाल के राजा शशांक को पराजित किया और बंगाल के राज्य पर अधिकार किया। शशांक का शासन कुमुदवती (वर्तमान बिहार और बंगाल का भाग) तक फैला हुआ था। हर्ष ने शशांक की मृत्यु के बाद बंगाल के क्षेत्र में विजय प्राप्त की, और यह क्षेत्र उसके साम्राज्य में शामिल हो गया।

(ii) कन्नौज पर नियंत्रण:

हर्षवर्धन का शासन मुख्य रूप से कन्नौज से था, जो उसके साम्राज्य का राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र था। कन्नौज की स्थिति उत्तर भारत के प्रमुख क्षेत्रों में से एक थी, और यह हर्ष के साम्राज्य का दिल था।

(iii) दक्षिण भारत से संघर्ष:

हर्ष के साम्राज्य ने दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों से भी संघर्ष किया, हालांकि वह पूरी तरह से दक्षिण भारत पर नियंत्रण नहीं पा सका। हर्ष के दक्षिणी अभियानों के सबसे प्रसिद्ध उदाहरण हैं:

- **चालुक्य वंश के सम्राट पुलकेशिन द्वितीय के साथ युद्ध:** हर्ष ने दक्षिण में आंध्र प्रदेश और कर्नाटका के चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय के खिलाफ युद्ध लड़ा। दोनों के बीच युद्धों के परिणामस्वरूप हर्ष को कर्नाटका क्षेत्र में सीमित विजय मिली। पुलकेशिन द्वितीय ने अपने लेखों में इस संघर्ष का उल्लेख किया, जिसमें उसने कहा कि हर्ष को हराया था, खासकर नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित क्षेत्र में।

(iv) पश्चिमी भारत में अभियान:

हर्ष ने पश्चिमी भारत के कुछ क्षेत्रों पर भी विजय प्राप्त की। उसने पश्चिमी पंजाब और सिंध क्षेत्र में अपनी सैन्य शक्ति का प्रभाव बढ़ाया। हालांकि, पश्चिमी सीमा पर उसकी विजय सीमित रही, और इस क्षेत्र में बाद में अरबों का आक्रमण हुआ।

3. साम्राज्य की सीमा:

हर्ष के साम्राज्य की सीमा इस प्रकार निर्धारित की जा सकती है:

- **उत्तर में:** हर्ष का साम्राज्य कश्मीर और हिमालय की तलहटी तक फैला हुआ था।
- **पश्चिम में:** हर्ष ने पंजाब और पश्चिमी सिंध तक अपनी सीमाओं का विस्तार किया था। हालांकि, पश्चिम में उसकी सीमा अरबों के आक्रमण से प्रभावित रही।
- **पूर्व में:** उसका साम्राज्य बंगाल और असम के क्षेत्रों तक फैला था।
- **दक्षिण में:** हर्ष का साम्राज्य नर्मदा नदी तक था, लेकिन दक्षिण के अन्य हिस्सों पर उसे पूर्ण नियंत्रण नहीं था। दक्षिण में उसने चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय से संघर्ष किया था।

निष्कर्ष:

हर्षवर्धन ने अपनी सैन्य नीतियों और अभियानों के माध्यम से एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया, जो उत्तर भारत और कुछ हिस्सों में पश्चिमी और दक्षिणी भारत तक फैला हुआ था। हालांकि दक्षिणी भारत में उसे पूर्ण विजय नहीं मिली, फिर भी उसका साम्राज्य भारत के एक प्रमुख राजनीतिक और

सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ। हर्ष की सैन्य क्षमता और राजनीतिक सूझबूझ ने उसे एक महान शासक बना दिया, और उसका साम्राज्य भारतीय इतिहास के स्वर्णिम युगों में से एक था।

भारतीय धर्म के इतिहास के अध्ययन में भक्ति आंदोलन के महत्व का विश्लेषण कीजिए।

भक्ति आंदोलन भारतीय धर्म और समाज के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली आंदोलन था, जिसने धार्मिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक जीवन और सामाजिक संरचनाओं को गहरे रूप से प्रभावित किया। यह आंदोलन 7वीं शताब्दी के आसपास शुरू हुआ और मध्यकाल में इसकी व्यापकता बढ़ी। भक्ति आंदोलन ने भारतीय धर्म के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, क्योंकि इसने धार्मिक विश्वासों, पूजा पद्धतियों और समाज में विविधता को प्रोत्साहित किया। भक्ति आंदोलन का भारतीय धर्म के इतिहास में विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है:

1. धार्मिक लोकतंत्र और व्यक्तिगत भक्ति (Religious Democracy and Personal Devotion):

भक्ति आंदोलन ने धार्मिकता को सशक्त और लोकतांत्रिक रूप से प्रस्तुत किया। इससे पहले, भारत में पूजा और धार्मिक क्रियाएँ मुख्य रूप से पुरोहितों और कर्मकांडों द्वारा नियंत्रित होती थीं। भक्ति आंदोलन ने इस परंपरा को चुनौती दी और धर्म को व्यक्तिगत और सरल बना दिया। भक्तों ने भगवान से सीधे संपर्क स्थापित करने की बात की, बिना किसी मध्यस्थ के। इसने पूजा पद्धतियों को सरल और सुलभ बनाया, जहां व्यक्ति का आस्थावान होना ही पर्याप्त था, न कि किसी विशेष धार्मिक प्रक्रिया का पालन।

- **व्यक्तिगत संपर्क:** भक्ति आंदोलन ने धार्मिक कर्मकांडों के जटिलता से बाहर निकलकर व्यक्तिगत भक्ति की ओर ध्यान आकर्षित किया, जिससे भक्त सीधे अपने भगवान से संपर्क कर सकते थे।

2. विविधता और समावेशिता (Diversity and Inclusivity):

भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज में विभिन्न जातियों, वर्गों और समुदायों के बीच समरसता और समावेशिता को बढ़ावा दिया। यह आंदोलन धार्मिक रूप से एकीकृत था, जिसमें जातिवाद, लिंग और समाज के अन्य भेदभावों को नकारा गया। प्रमुख भक्ति संतों जैसे रामानुज, संत तुकाराम, गुरु नानक, मीरा बाई, कबीर और सूरदास ने धार्मिक उन्मूलन की बात की और यह सिखाया कि सभी लोग ईश्वर की दृष्टि में समान हैं, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म या वर्ग से हों।

- **जाति व्यवस्था का विरोध:** भक्ति संतों ने ब्राह्मणवाद और जातिवाद की आलोचना की और इसे मानवता और समानता की ओर मोड़ा। उदाहरण के लिए, संत कबीर ने जाति-पाती के भेदभाव को नकारते हुए सर्वेश्वर की भक्ति की बात की।

3. संगीत और काव्य का योगदान (Contribution to Music and Poetry):

भक्ति आंदोलन ने भारतीय साहित्य और संगीत में अपूर्व योगदान दिया। भक्तों ने कविता, गीत, और भजनों के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं का प्रकट किया। इस आंदोलन के संतों ने अपनी काव्य रचनाओं में भगवान के प्रति प्रेम, भक्ति और समर्पण को व्यक्त किया। इन रचनाओं ने भारतीय साहित्य को समृद्ध किया और भारतीय संगीत के विकास में योगदान दिया।

- **काव्य और संगीत:** सूरदास, तुकाराम, मीरा बाई और रविदास जैसी हस्तियों ने भगवान के प्रति अपनी भक्ति को काव्य और संगीत के रूप में प्रस्तुत किया, जो आज भी लोगों के बीच लोकप्रिय हैं।

4. सामाजिक सुधार और समता (Social Reform and Equality):

भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज में गहरे सामाजिक बदलाव की दिशा में काम किया। इस आंदोलन ने समाज में व्याप्त असमानताओं और बुराइयों को चुनौती दी, जैसे जातिवाद, महिलाओं के प्रति भेदभाव, और सामाजिक कुरीतियाँ। संतों ने इन सभी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया और सच्ची भक्ति को न केवल ईश्वर से, बल्कि समाज के सभी सदस्यों से समान प्रेम और सम्मान के रूप में देखा।

- **महिलाओं का सम्मान:** भक्ति आंदोलन ने महिलाओं को पूजा में बराबरी का स्थान दिया। उदाहरण के लिए, मीरा बाई ने अपने भजनों और रचनाओं के माध्यम से भगवान के प्रति अपनी भक्ति को दिखाया, और वह एक महिला संत के रूप में प्रसिद्ध हुईं।

5. समाज में धर्म के सरल रूप का प्रचार (Promotion of Simplicity in Religion):

भक्ति आंदोलन ने धार्मिक प्रथाओं को सरल और व्यावहारिक बनाया। इसमें कोई जटिल अनुष्ठान या कर्मकांड की आवश्यकता नहीं थी, और यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला था। भक्ति आंदोलन ने यह विचार प्रस्तुत किया कि भगवान की भक्ति और प्रेम के माध्यम से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है, और इसके लिए कोई धार्मिक या सामाजिक प्रतिबंध नहीं थे।

- **सम्प्रदायिक एकता:** भक्ति संतों ने समाज में धार्मिक समानता और एकता का संदेश दिया। उदाहरण के लिए, संत नानक ने हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के बीच एकता की आवश्यकता की बात की और गुरु ग्रंथ साहिब को सिख धर्म के सिद्धांतों का स्तोत्र बनाया।

निष्कर्ष:

भक्ति आंदोलन का भारतीय धर्म के इतिहास में अत्यधिक महत्व है, क्योंकि इसने धार्मिक जीवन को सरल, समावेशी और व्यक्तिगत बनाया। इसने न केवल धार्मिक दृष्टिकोणों में विविधता को बढ़ावा दिया, बल्कि भारतीय समाज को जातिवाद, वर्ग भेद और धार्मिक असहमति से परे जाकर एक नई दिशा दी। इसके माध्यम से भारतीय समाज ने एक नए धार्मिक जागरण की ओर कदम बढ़ाया, जो आज भी भारतीय संस्कृति और समाज में गहरे प्रभाव डालता है।

निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए।

1. पल्लव वास्तुकला:

पल्लव वास्तुकला 6वीं से 8वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत में पल्लव साम्राज्य के दौरान विकसित हुई थी। इसमें मंदिरों और स्थापत्य कला का अद्भुत मिश्रण था। पल्लवों ने मंदिरों की चट्टान

काटकर खुदाई की और दीवारों पर उकेरी गई उत्कृष्ट चित्रकला के लिए प्रसिद्ध थे। रॉक-कट मंदिरों, जैसे महाबलिपुरम के रथ और अर्जुन का तप, पल्लव वास्तुकला के प्रमुख उदाहरण हैं।

2. **गुर्जर प्रतिहार:**

गुर्जर प्रतिहार वंश 8वीं से 11वीं शताब्दी तक उत्तर भारत में एक प्रमुख साम्राज्य था। इनका शासन खासतौर पर राजस्थान, मध्य प्रदेश, और उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों में फैला हुआ था। गुर्जर प्रतिहारों ने हिंदू धर्म और संस्कृति को बढ़ावा दिया और इस काल में कला, साहित्य, और वास्तुकला में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने भारत के पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भाग में अरब आक्रमणों से देश की रक्षा की थी।

3. **गुप्तोत्तर काल में भूमि अनुदान:**

गुप्तोत्तर काल (7वीं से 12वीं शताब्दी) में भूमि अनुदान का प्रचलन बढ़ा। इस समय राजा और सामंतों द्वारा बृहद भूमि क्षेत्र पर विभिन्न धार्मिक संस्थाओं, मंदिरों और ब्राह्मणों को भूमि दान की जाती थी। यह अनुदान प्रशासनिक और धार्मिक उद्देश्यों के लिए दिया जाता था। भूमि अनुदान ने समाज में धार्मिक प्रभाव को बढ़ावा दिया और इससे कृषि में सुधार हुआ।

4. **अजंता भित्ति चित्र:**

अजंता गुफाएं महाराष्ट्र में स्थित हैं और इनकी दीवारों पर चित्रित भित्ति चित्र विश्व प्रसिद्ध हैं। ये चित्र बौद्ध धर्म से संबंधित कथाओं और जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। इन चित्रों में धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक जीवन की झलक मिलती है। अजंता के भित्ति चित्र गुप्तकालीन कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो भारत के प्राचीन चित्रकला के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।